एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 05, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2025)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

आर्या परियोजना अंतर्गत स्वरोजगार ने बदली ग्रामीण महिला की किस्मत

(*कमलेश कुमार यादव, डॉ. सुभाष चंद्र यादव, डॉ. सुमन खंडेलवाल, डॉ. विकास आर्य, डॉ. हंसराम माली, डॉ. पूनम एवं पुष्कर देव)

कृषि विज्ञानं केंद्र, अलवर-1, राजस्थान, भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: smw591129@gmail.com

भारत में ग्रामीण महिलाएं खाद्य संरक्षण, पैकेजिंग और ब्रांडिंग जैसी गतिविधियों के माध्यम से कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं| उच्च मूल्य वाले उत्पाद बनाकर और बाजार पहुंच बढ़ाकर, विशेष रूप से डेयरी, बागवानी और हस्तशिल्प जैसे क्षेत्रों में ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं, जिससे उनकी आजीविका में सुधार होता है और वे आर्थिक रूप से सशक्त होती हैं। भारत विश्व में सब्जियों का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है| परंतु फलों और सब्जियों का प्रसंस्करण, वैल्यू एडिशन विकसित देशों में की तुलना में बहुत कम है| प्रसंस्करण (मूल्यवर्धन सहित) में जीडीपी, ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन और उद्यमियों के लिए व्यवसाय के अवसरों में योगदान करने की जबरदस्त क्षमता है।

परिस्थिति विश्लेषण : श्रीमति वंदना ग्राम धोलापलाश, तहसील मालाखेड़ा जिला अलवर की निवासी है श्रीमति वंदना एवं उनका परिवार पूर्णरूप से कृषि कार्य से जुड़ा हुआ है इनका सम्पूर्ण परिवार कृषि कार्य से प्राप्त आमदनी पर ही निर्भर था। चूंकि श्रीमति वंदना एक शिक्षित महिला है अतः उन्होने कृषि के अलावा कृषि से संबन्धित अन्य कार्यों द्वारा परिवार की आमदनी बढ़ाने की ठानी, इस सन्दर्भ में उन्होने कृषि विज्ञान केन्द्र अलवर-1 के वैज्ञानिको से सम्पर्क कर कृषि कार्य के अतिरिक्त आय अर्जन हेतू अन्य व्यवसाय करने की जानकारी हासिल की।

कृषि विज्ञानं केंद्र के वैज्ञानिको के द्वारा उन्हें भारतीय कृषि अनुसन्धान द्वारा प्रायोजित आर्या परियोजना के बारे में बताया गया जिसका उदेशय ग्रामीण युवाओ को कृषि की और आकर्षित करना व स्वरोजगार की और अग्रसर करना है| जिसमे **आर्या योजना** अंतर्गत उन्होने फल सब्जी प्रस्संकरण एवं मूल्य संर्वधन मे गहन व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक प्रशिक्षण कृषि विज्ञानं केंद्र अलवर पर प्राप्त किया। वह स्वयं भी कृषि और बागवानी उत्पादों के मूल्य संवर्धन और प्रस्संकरण में रुचि रखती थी। इसके अलावा उन्होने कृषि शोध पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से अपने ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि की।

तकनिकी हस्तक्षेप : कृषि विज्ञान केन्द्र अलवर-1 द्वारा श्रीमति वंदना को फल सब्जी प्रस्संकरण एवं मूल्य संर्वधन की विभिन्न वैज्ञानिक तकनिकीयों पर प्रशिक्षित किया। प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न तरह के अचार, मुरब्बा, चटनी आदि का सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया गया जिससे फल सब्जी प्रस्संकरण के सभी पहलुओं के बारे मे विस्तृत जानकारी प्राप्त की। प्रशिक्षण पूरा होने के बाद, उन्होंने वैज्ञानिक गृह

विज्ञान के माध्यम से एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिको के तकनिकी पर्यवेक्षण एवं मार्गदर्शन में श्रीमति वंदना नें वर्ष 2021 से फलों एवं सब्जियों को अचार एवं मुरब्बे के रूप में प्रस्संकृत करना शुरू किया। वह गुणवत्ता में सुधार, उत्पादों के मानकीकरण और अन्य उत्पादों की तैयारी के लिए अक्सर केवीके का दौरा करती थीं। केवीके वैज्ञानिक नियमित रूप से प्रस्संकरण इकाई का भ्रमण करते थे और मूल्यवर्धित उत्पादों के प्रसंस्करण के लिए आवश्यक मशीनों की खरीद और उत्पादन के विस्तार के लिए उन्हें लगातार प्रेरित करते थे। केवीके ने उन्हें कच्चे माल के स्रोत, पैकिंग सामग्री, एफएसएसएआई लाइसेंस और ब्रांडिंग के लिए तकनीकी सहायता प्रदान की। साथ ही कृषि विज्ञानं केंद्र की सहायता से अपने उत्पादों को किसान मेलों, प्रदर्शनियों, किसान गोष्ठियों आदि में प्रदर्शित किया गया और इन गतिविधियों ने उन्हें अपने उत्पादों को बाजार में पेश करने और उपभोक्ता प्रतिक्रिया प्राप्त करने का अवसर दिया।

सफलता का विवरण: कृषि विज्ञान केन्द्र अलवर 1 द्वारा प्रस्संकरण एवं मूल्य संर्वधन की तकनिकीयों में ज्ञान एवं दक्षता हासिल करने के बाद और उपभोक्ताओं से अच्छी प्रतिक्रिया मिलने के बाद उन्होंने तहसील स्थानों और जिले में विभिन्न दुकानों को आपूर्ति करना शुरू कर दिया। श्रीमति वंदना वर्तमान में विभिन्न फल एवं सब्जियों जैसे आवंला, नींबू, लाल एवं हरी मिर्च, हल्दी, केरी, लहसुवा, टीट, लहसुन, कमरख आदि फल एवं सब्जियों 120 क्विंटल अचार बना रही है और बिकी कर लगभग 5.5 – 6.5 लाख रूपये का शुद्ध मुनाफा प्रतिवर्ष प्राप्त कर रही है। श्रीमति वंदना ने अपने मूल्य वर्धित उत्पादों की बिक्री के लिए वदंना ग्रामोद्योग के नाम से संस्था पंजीयन करवाकर "वदंना अचार एवं मुरब्बा" के नाम से तैयार उत्पादों की बिकी कर रही है।

सफलता का असर : श्रीमति वंदना आज एक सशक्त महिला उद्यमी के रूप में जानी पहचानी जाती है वे अब एक महिला कृषक के साथ साथ महिला उद्यमी है एवं क्षेत्र की अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत एवं परामर्शदाता है।

क्षेत्र में योगदान : श्रीमति वंदना के अथक प्रयासो एवं कठिन परिश्रम के परिणामस्वरूप अपने तैयार उत्पादों की स्थानिय क्षेत्र एवं जिले के अतिरिक्त जयपुर एवं दिल्ली शहर में भी बिकी कर रही है। श्रीमति वंदना एक महिला उद्यमी के रूप में कार्य करने के कारण कई महिला किसानों के लिए प्रेरणास्त्रोत एवं विकास के पथ का एक आर्दश उदाहरण है|